

स्नानदिव्या चमायः॥ मार्क^{निक} छुथारायगर वरानुगुहायावण
नंचक्रेयस्यप्रवृद्धविरवावुन्नविडन्नकल्या॥ दिव्याकृद
पुमथगलेस्नागुगर्भपुणवासायंरव्यांरवगरवरागुयस
वधिकायाः॥ यादवीमन्त्रकेटरःपुमर्थियाचधुमृधुदिनी
याभायामहिषासुनक्षयकनीत्यानकवीजनाजिनीयासा
गुंरानिभृगुदेत्यदतनीयादवदवागिस्तादवीममूनक्ष
दक्षिणरजग्वधुवयानक्षगु॥ उत्तररजकधिकाप

आशा नरदास

ASHA ARCHIVES

तदनन्तर

चतुष्टय ०५

नरदा

निगगाशीसिद्धिस्तस्मीयना॥ कथ्येनस्मृति कलु कुमुधवत्सा
निगगाशीसिद्धिस्तस्मीयना॥ संसायास्मीवदुःखचञ्जै केहनिनिष्कं पु
दं सर्वदा॥ श्रीमत्येवमस्वां बुज्जदशस्वर्गेषु गतिगायातूमां
याशमनकाग्निकुहलमस्ति तिरमरुपाः सा मार्गवक्रिथिग
यदस्मत्सु संस्तु॥ चिंतुषु चिंतुषु विषया दविनी स्वारावया
ययुग्मं पुनमासि कालिं॥ तुंनु सवदासनस्य दधती मध्य
सत्वाटपुणं॥ सीः क्रीं क्रीं मिमनसं वा स्यात् न सर्वतः ८ वा सीति

ति

पुना हृदि लिता राव श्रो सा सदा हृदि ताः किं न्या न्ये सहसा पथि
तिरिपथि शक्तिर्मयी वा प्रयी ॥ माया कसुति नी कथा मधुः
मती कालिकला मालिनी ॥ मात मी विजया जै रंग वती देवी
मिवा जं रवी ॥ ग किः जं कन वल्लभाति नयनी योग्यादिनी ह
नवी जी का नीति पून पनापन मयी माता कुमात्री एमी ॥ श्री
वाहन न जानामि ने जानामि विस्तर्तन ॥ ए जा ज्जीवन ज नमि
त्वं गति य नम ग्धनी ॥ न्ये न्ये ज नम नास्ति त्वमवग नम म
नस्यात्का न नराय न न क न क प न म ग्धनी ॥ या न्या न त्वा ॥ गप

स ॥ पीग पुता ॥ दवा जिर्वी द ॥ नु कान क ह व नि न्द्र ज गति प ॥ ह
ग्धनी वा ज वे त्त जी ग ग ॥ म प मा रा ग व ती नि ग्ध ग्धनी द कि
॥ ॥ स्ताना ग म्य कू ज ग्धनी कू ल ग ॥ म वा नू द्ध दि ग्ध म य काः श्री वा
मां पु म मा मि वि ग्ध ज न नी द्ध ग्धनी सिद्धि दी ॥ म म्भु ल प ज ॥ श्री
त्मा जिर्वी द ॥ अम्बि पूर्व गते पद र ग व ती वे त न्ये पा त्म का स्ताने
वा व द्ध ला क थ ह रि ह नं बु क्रा म नी वि ग्ध य ॥ रा ल्प ह व य यं व क न
द नू व ग्ध या गि नी ये व क व न्द्रा क्री म्नि म नि वि व द्ध म म लं मो पा प
नि त्यं कृ ज ॥ ग्ध क पू य ग्ध हि त्वा द र्प पा ग्ध द क न स्त मि न हे हिं य ॥

किमिदं विचिं कां ईशमन्वा यजः अस्तु यरु ॥ ३ ॥ स्वगिन स्का
कगानि पातय ॥ प्रि ना व न्या ॥ क न व उ रं न्या स ॥ ज ला क न न द
वा प नि ग्रा म्य म ॥ व लि पा गु नि कि प्या ॥ नि द र प नं स्का नं ल र
नं प न म उ व नी य गु वु क्का द्या द वि ग गु ग क्त ल म ह वि ॥ व लि
ग क्त र स्वा हा ॥ ज ला र्घ्यं र्वा र्घ्य पा ठ स्का क गा दि व लि पा गु नि
रि प्या ॥ किमिदं विचिं कां ईशमन्वा यजः अस्तु यरु ॥ ३ ॥ त र्जः
नी न ॥ मो ग र ति याः द वा दि सं स्य स्य ॥ नं द वा ॥ जीं व लि ॥ गीं

वि ल पा र्घ्य ॥ स्तुं ह दि ॥ स्तौः क न गा उ नं ॥ स्तौः क न धू नि ॥ स्तुं
ॐ जीं नं सं हा न म इ पा द व स्का नं ल पृ ष्ठं गृ ह ति ॥ आ द्या य व
लि पा गु नि कि प्या ॥ ल द ह द व ती नं रा व य ग ॥ जी र्वा द क न द व
गि ग्रा म्य ॥ य ना म र्वा र्घ्य न मः स्वा हा ॥ ज ल पा ठ ना र्घ्य द द ॥ अ स्म
त्य जि म श्र ष्ठा श्र ष्ठा न्ना य क र्ति का उ गु व षु ॥ सि दि त स्त्री ग र क
का लि प्रि पु न र्द नी नां नि ल्य क र्म द वा र्घ्य न सं स्र ष्ठी र्थ क ल
मा र्क षु रं य वा य श्र ष्ठा र्थ न मः स्वा हा ॥ ॐ ल्य र्घ्य ॥ नि मा ल्य

द्विपदसुखयु॥ॐॐॐ वहुनाथमयनमः॥ॐॐॐ निर्मल्यवामि
 नमः॥चनधममगपिब॥ॐॐॐ कात्ममयहनमं सर्वव्याः
 धिवाचननमवाचनधमदकपित्वापूनर्जन्मनविश्वत॥ॐॐॐ
 ॐॐॐ नमःॐॐॐ जाजाकासमिष्यदनाजनेसिखितमिदंॐॐॐ
 सुवहेॐॐॐ ॐॐॐ गिजिनगदीॐॐॐ कवाचसिखितनियसुजाय
 जगीतिॐॐॐ मॐॐॐ स्वाममदायनदीयासंॐॐॐ

वनालयकनमःॐॐॐ

ततः प्रागस्मननमजपाजपं॥ॐॐॐ जपानिचदनं॥प्राका
 तउत्कायाकनीयकनस्वदहकादयत॥गुगुगु
 ॐॐॐ स्मनय॥हकोजतिवज्ज्यापॐॐॐ॥प्रातःमिनसिखित
 ॐॐॐ दिखजपेनमंॐॐॐ वनदासयहकोयास्मनननामदः
 वकं॥ॐॐॐ हंसाहंसायविग्रहसाहंसाहंसायधामहित
 न्नाहंसःॐॐॐ दूयात॥ॐॐॐ श्रुतनस्तथादयदानस्यस्य
 नस्तथादयपयकंॐॐॐ साकास्तस्यभयकनाधिकेकवि

जगिता हस्त मज्जपा जयं मस्तु कवि व्यादि मि सु कल्प ॥ ४६ ॥
 जगानि गल्ल जय वृक्ष लघु वृक्ष हस्त कं ॥ विष्णु वृक्ष
 हस्त वृक्ष हस्त हस्त पिना किने ॥ हस्त मात्मन च वग
 नव वस्तु हस्त कं ॥ पन मात्मन हस्त वृक्ष विष्णु निव
 दयत ॥ हस्त किं रगतिं जीवा जयति सर्व दा श्रुत्यात्म
 नम मागु म जीव मूको हव ननः ॥ हस्तः हस्तः सा हं वृत्ति
 म जपात्मन ही वरुण गत्वा ॥ हस्त न हस्त वि होय म जय ॥

ततः तव्य एष जन विद्या न ॥ ऐं गुरु नमो एष जयानि नमः ॥ तव्य या
 मि नमः ॥ एवं सर्व वृक्ष त्रेक्ष जन तव्य ॥ जौ न वात्मा गुरु नमो र
 का य श्री पा. ए. त. ॥ जौ गुरु पत्ति नमो र का य श्री पा. ए. त. ॥ जौ श्री
 धि कर्म नमो र का य श्री पा. ए. त. ॥ जौ श्री कण्ठ नाथा य श्री पा. त. ॥ ऐं
 वृत्ति मादि मातृ का न्यः श्री पा. ए. त. ॥ ॐ जीं हं अशिता ज्ञादि चैर वे न
 श्री पा. ए. त. ॥ जौ अष्टा विंशति कर्म नमो र का य श्री पा. ए. त. ॥ जौ त्रि
 खण्डा नमो र का य श्री पा. ए. त. ॥ ऐं हं हस्त कुबुद्धा नाथ हस्त नाथा
 ये सो गा ये सवा ह नाथै सपरि वारो ये श्री पा. ए. त. ॥ ३ ॥ जौ शिखा स्य
 ठं वा ग न्यै श्री पा. ए. त.

परिनिर्वाण
श्रीसुविषयनाथ
सुविषयनाथ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

आवमनमंगु
 जों आत्मन त्याय स्वाहा ॥ कुरु सिन्यां ॥
 जीं विद्याग त्याय स्वाहा ॥ हृदा स्तंभा ॥
 हूं जिवन त्याय स्वाहा ॥ आस्त्रयोध ॥
 ॐ गिरिगर्वं संहारं दहं हिमदाहना ॥

[illegible]

नवनमः॥ अर्घ्यपूजनं॥ जलपाणस्त्रायनमः॥ पुनः॥ अं॥ अं॥
 खपाणस्त्रायनमः॥ पुनः॥ बलिपाण॥ बलिपाणस्त्रायनमः॥ विम
 षार्घ्य॥ अर्घ्यपाणस्त्रायनमः॥ गतः॥ मध्व॥ गुरु॥ एषां दक्षवामपा
 ण्यो अक्षतं क्षिपन्॥ किमिदं विवेकं कुरु॥ अक्षययु॥
 वज्रमुद्रायाः शृंगं गृह्णित्वा स्वमुखं गिरिगम्य तदक्षं गृह्णन् मोक्षयेत्
 नृक्षं हृद्वज्रं पीजतस्वाहा॥ अनी गुरुयागं नाष्टधानं वन्धयेत्
 उंचनमकूलकूलमचलज्जोर्जोर्क्षं हृद्वज्रं गतः हस्तजलनमि नमः॥

साता १

गतः॥ मध्वि॥ आसा॥ अस्य गुरुविकामं गृह्णन् चानुवचनम॥ गिरिहृत्तीक्ष्णदसनम॥ अक्ष॥ अक्षजलदवनायेन
 वाम॥ गुरुनवनमः॥ दक्षिण॥ गगनवतथनमः॥ मध्व॥ गीस्व
 षुग्वनीष्टद्वतायेनमः॥ कौटिकायां चतुर्दिग्वन्धनं॥ किमिदं
 विवेकं कुरु॥ अक्षययु॥ ४॥ प्राश्नयाम्य॥ गमय व्यावा॥
 क्षोः॥ यं न लं वं॥ गमय गेवा॥ १२॥ २४॥ १६॥ अतिप्राश्नयामो॥ गतः॥ क
 वसाधनी॥ किमिदं विवेकं कुरु॥ अक्षययु॥ ४॥ कनं न्यात
 उंचनमारागवरोहत्कमलायेज्जोर्गुरुयागं नमः॥ अक्षं कुरु
 ये कूलदीपायेज्जोर्गुरुनीसी स्वाहा॥ ज्जोर्क्षं वर्वनमि रविर्क्षं
 १॥ १५॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥

मध्यमा

निर्गुणस्यां वषट्॥ ध्यानत्रयान्नत्रयानामुखिवद्वद्व्यापयेडं
त्रेनामिकायां हं॥ कौंठौ मरुका नि कारयेडं कनिष्ठायां वौषट्॥
किं निरविंशं कंकणं वायेडः॥ अस्त्राय हं॥ गगः वकुं न्यास॥ न
नभारागवसे हल्क मलाये जाँ उड्व व कारये नमः॥ स्विं कवि
कारये कलदीपाये जाँ पर्व व कारये नमः॥ जाँ जाँ डी वर्व न गिरव
हं दक्षिण व कारये नमः॥ ध्यानत्रयान्नत्रयानामुखिवद्वद्व्यापये
डं उरु न व कारये नमः॥ कौंठौ मरुका नि कारये पुष्पि म व कारये
जाँ

नमः॥ किं निरविंशं कंकणं वायेडः॥ यत्रापत्रव कारये नमः॥ गगः
वकुं न्यास॥ नभारागवसे हल्क मलाये जाँ हृदयाये नमः॥ स्विं
कवि कारये कलदीपाये जाँ गिर मस्वाहा॥ जाँ जाँ डी वर्व न गिरव
गिरये वषट्॥ ध्यानत्रयान्नत्रयानामुखिवद्वद्व्यापयेडं कव वा
येडं॥ कौंठौ मरुका नि कारये जाँ न उग्रयाये वौषट्॥ किं निरवि
शं कंकणं वायेडः॥ अस्त्राय हं॥ अर्च्यं गी रव पूजा॥ अर्च्यं गी रव
पुस्तकालय॥ हं॥ अस्त्राय हं॥ विषदिकी पुस्तकालय॥ सज्जनं॥ जाँ हृदया
ये नमः॥ जल न च न यत्॥ वें गं गाय मूने च वत्स अवति व स न स्वती॥

मः श्रीनाथाय॥ नमः सिद्धिनाथाय॥ नमः कुङ्कुमाय॥ वाम
हस्तस्य प्रथमां सख्यं गृह्णित्वा गुरुं तव्य॥ श्रीगुरुं पूजयामि नमः
गर्वयामि नमः॥ पन गुरुं पूज० ग०॥ पनम गुरुं पू० ग०॥ पनम
प्रीति गुरुं० ग०॥ पनापन गुरुं० ग०॥ वामहस्तस्य प्रथमं तुला
मं स्वाध्याप्य॥ स्वगिनि पूजने॥ पत्रासनाय पादुकी॥ हस्त
श्रद्धा रहानकाय पादुकां॥ वलि॥ गतः नवान्मात्यासु॥ ज्ञं ज्ञं
यह० ४॥ कनसाधने॥ श्रीगुरुं पूजयामि नमः॥ श्रीगुरुं पूजयामि नमः॥
हा॥ लं मं मं मात्यां वषट्॥ नमो नमो मात्यां दं॥ कुं कनिष्ठिका

स्यां वीषट्॥ श्रीकनकलक्ष्मणां रुद्र॥ श्रीहृदयनाथनमः॥ श्रीजिनस
स्वाहा॥ लं गिस्वाध्याप्य वषट्॥ नमो कवसाय दं॥ कुं नगगुयाय वीषट्
श्रीं अस्माय रुद्र॥ पुनः मं गुरुं न्यास॥ हं गिस्वास्मान्पादुकी॥ सं गि
नस्मान्पादुकां॥ हं ललाटपादुकां॥ मं वकुमलपादुकां॥ लं
हृदयपादुकी॥ वं नासोपादुकी॥ नं गुरुपादुकां॥ यं जानूदय॥
कुं पादुदयपादुकां॥ श्रीसर्वांगपादुकां॥ स्वगिनासिपूजनं॥ हं क
लीगमनन्दादिनवनाथस्यापादुकां॥ नं यत्रासनाय पादुकां॥ नं
ननासनाय पादुकां॥ प्रथमं कं चत्वारिंशत्पादुकां॥ ॥

पञ्चासमं गवस्तु कृदुता वक्तुं गित्वा च नं। खवर्धं पर्व कुं गददि
 लक्ष्मणं लभारिणं॥ उल्लेखपीतवर्धं स्थापयितुं मुक्तं नृत्तिनं॥ नक
 साददि लक्ष्मणं मुल्लेखपीतवर्धं नमववर्धं गदितुं नृत्तिनं वधं च पीतस्य
 कृष्णदक्षिणं॥ नकमं मिथ्यादुत दक्षिणं मुल्लेखपीतवर्धं॥ अष्टादश
 कृष्णदक्षिणं कवन्धं सानरुषिणं॥ खवर्धं कवन्धं नंदं वं गितुं लमं क
 र्णतथा॥ स्रुतं कर्म मुल्लेखपीतवर्धं नमववर्धं वाधं नः स्रुतं
 युकं पनञ्चयधं स्रुतं लभारिणं॥ चकुं चैव गवतामिव नदराय हस्तः

कप्रप्र३

६३५

कं॥ काश्चिन्नुचनंदवं नानालंका नमस्त्रिणं॥ गवपी ० खवर्धं
 मासने स्रुतं स्रुतं॥ नृवं नृपं नवात्मानं मम मुल्लेखपीतवर्धं॥
 ध्यायितुं कात्मादि प्रसिद्धिनिमानवा॥ ध्यायितुं नमः॥ अष्टादश
 ते श्रानन्दं किं नवानन्दं विलापितय सरे नवान्मा गवतामिव
 नकायगी पादकां॥ ३॥ स्रुतं हृदयाय नमः॥ इति स्रुतं विषयं॥ ग्लं नृ
 गवतामिव स्रुतं विषयं च गवतामिव स्रुतं विषयं पादकां॥ इति श्रुतं गवतामिव
 नमः स्रुतं विषयं च गवतामिव स्रुतं विषयं पादकां॥ विद्या गवतामिव स्रुतं विषयं

कौ॥ ॐ यन्मासनायपाइको॥ सरेडोषधीकर्मरहानकायपाइको॥ वलि
 ॐ वृषासनायपाइको॥ हरे आनन्दगकिरोनवानन्दविनाधिपतयः
 सरेगीकलनाथदवस्वगकिशुगायत्रीपाइको॥ वलि॥ वन्दनादि॥
 णिग्ननम्डा॥ गीसिद्धो गानन्दनार्थगर्षयामिनमः॥ गीदिब्योघान
 न्दनार्थगर्षयामिनमः॥ गीमानवीघानन्दनार्थगर्षयामिनमः॥
 स्वगिर्वपूजनं॥ हंसासनायपाइको॥ वृषासनायपाइको॥ मयूरास
 नायपाइको॥ गरुडासनायपाइको॥ महिषासनायपाइको॥ गजा

सनायपादको॥ पुनः सनायपादको॥ सिंहासनायपादको॥ ॐ नमः
 ध्यायन्नुमाधवुनंदविमलवुक्त्राब्धिविचं पादको॥ १०॥ मादुग्धय
 कोमाय॥ विप्रय॥ वानास्य॥ ॐ नमः॥ वामुग्धय॥ महास्य॥
 ॐ नमः॥ अस्तितांगरे नवायनमः॥ ॐ नमः॥ नृनरे नवायनमः॥ १०॥
 वस्तुतेन वायन॥ क्रोध॥ उन्मल॥ कयासि॥ राषम॥ संज्ञानरे नवा
 यनमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
 ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥
 पादको॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥

तद्नादि शानि मूडा ॥ यन्नासनाय पादको ॥ सह नृद्वयमु
 मे गुरव मुमा एवमु निखम्भ एघन कायणी पादको ॥ व
 लि ॥ तद्नादि निखम्भ मूडा ॥ यन्नासनाय पादको ॥ सि
 हासनाय पादको ॥ वृषासनाय पादको ॥ पंचपुगासनाय पा
 दको ॥ पृथ्वीकं चंद्राश्वायता ॥ वृषासनाय पादको ॥ दवस्वर्ग नृपत्ति
 तै ॥ ७ कवकुंठि नगुं वरुजाष्टादश ॥ अत्रिनी ॥ उमनूपन ग्रीवीर्गस्व
 जमं कृष्णवज्रकं ॥ ग्रीवकी वधवाशं श्रीवनदे लज्जदक्षिणा ॥ वामे

षट्पांगुल तश्च धनुः रुल कपाशकं ॥ यष्टं कपाल वेष्टुं ॥ त्र
 तया राय नाशनं ॥ पट्टेन वन्धि जानू वामा नृ लोचन कुटुका ॥ ७
 कवकुंठि नगुं च त्र नृधमवन वाह्निता ॥ धिरुजावनदाद्वीर्ग
 रुक्मा राय सव्यसू ॥ नामा एन द्वा ल वोगी स्व नृ नृ नृ मल्लका ॥ वि
 र्वना कंठ पाटने चानू पीन च सुनी सर्वरान मसं गमरा लुक्का
 ग्वसू अरिता ॥ ७ वं ल्प्य या कुजामाग पञ्चिमा म्नाय रेनबी ॥ कृत्तु
 गनाथ वीन न कुजामाग पञ्चिमा म्नाय रेनबी ॥ कृत्तु
 गं गृकं चानादि ॥ गिर्या जलि ॥ ७ जी जी श्री श्रीः हरे हरे पञ्चिम

निःश्वसनापवाइकां॥महिषासनापवाइकां॥सिंहासनापवाइ
ॐ जीं त्रापुंद इरुं उगुचमुनिप्रमदिनीं इरुं सदानकरत्वं
मां इंसः मृत् ए सुन उगुचमुदव्यपाइकां॥३॥वलि॥सर्व
दा॥जीं चमुगु तर्पयामि॥जीं वलि कां तर्पय॥जीं उगुचमु
तर्पयामि॥१॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥१०॥११॥१२॥१३॥१४॥१५॥१६॥१७॥१८॥१९॥२०॥२१॥२२॥२३॥२४॥२५॥२६॥२७॥२८॥२९॥३०॥३१॥३२॥३३॥३४॥३५॥३६॥३७॥३८॥३९॥४०॥४१॥४२॥४३॥४४॥४५॥४६॥४७॥४८॥४९॥५०॥५१॥५२॥५३॥५४॥५५॥५६॥५७॥५८॥५९॥६०॥६१॥६२॥६३॥६४॥६५॥६६॥६७॥६८॥६९॥७०॥७१॥७२॥७३॥७४॥७५॥७६॥७७॥७८॥७९॥८०॥८१॥८२॥८३॥८४॥८५॥८६॥८७॥८८॥८९॥९०॥९१॥९२॥९३॥९४॥९५॥९६॥९७॥९८॥९९॥१००॥
कां नमः॥सिद्धि लक्ष्मी देव्यपाइ०॥३॥वलि॥मा ला मनु॥ॐ
नमः सर्वसिद्धि शशिनी रया नमः सर्वसिद्धि मारु रया नमः
त्यादिगानन्द नन्दि ताथे॥सर्वे लकृत वक्रनायिकायै

वरेच वधु कापालि योग्य थ ॥ ॐ क्रीं हूं ह्रीं क्रीं क्रीं नमः ॥ ॐ
 मन्त्रमहं सिनी निर्वी ह मागं दे विषमा प्रवपुष्म मनिस्तकल
 इति गानिष्ठ क्रे गदति नि सवी पदा क्का चितानि सिके गये
 पुम धनी देवि ॥ आग ॥ २ ह स २ व लो २ न न २ चि नानु वता
 रुक्मि मम स्व ग पु म द्ये २ र वा दि २ रि ॥ ह ले रि नि स्थि २ दि नि
 २ र व २ न गा २ य २ कं द्य २ ता व शा व त्स म स क ल म ना न थ न
 ध्य २ य न म का न शि के रु ग व ले म हा रे न व च य २ नि नि नि
 द म व न न मि ग स क ल म नु मा गः पु षा ग न न व त्स ला द वि म

हा कालि काल नागिनि हूं हूं उ सी द म द ना त्नां कु न २ सु ना
 सु न क न्य कां कीं कीं हूं हूं ३ स्वा हा ॐ कीं हूं कीं हूं कीं नमः
 स्वा हा ॥ वलि ॥ रं कुं मि वा ए ग व त्या दि स्था वा लि ग २ ३ स्वा हा
 व न्द ना दि ॥ ल मी मू डा ॥ रं कुं इ व नु को लि ग र्प या मि नमः ॥
 रं कुं पु र्यं गि नां ग र्प या मि नमः ॥ रं कुं सि द्धि ल क्ष्मीं ग र्प या मि
 नमः ॥ हूं गि सि द्धि ल क्ष्मीं ग र्प या मि नमः ॥ ग गः २ ३
 नमः ॥ हूं गि सि द्धि ल क्ष्मीं ग र्प या मि नमः ॥ ग गः २ ३
 नमः ॥ हूं गि सि द्धि ल क्ष्मीं ग र्प या मि नमः ॥ ग गः २ ३

सुदहं बलि॥

三

अथ निबोध प्रणमः॥ निपंजन कस्तुता सनायवाइ को॥ तननि
बोध कजिकां ध्यान हा हा नावः॥ पुष्पे कथ्ये ला ध्यायता नी लाज
न निराका नां द्विरां कस्तुता नायिकी॥ कवकुं महादेवी निनगं
वन्दु अरव नो॥ वरदा रायः अरा घो स बा स्मर न हा अ सितां॥ हेन
वं म त्वन्नु पा हं अ न्या का नं ग वं ह म न ग॥ ध्यान पुष्पे न मः॥ नं ग
प कि स्मः पा इ कां॥ नं ध्यां स्यां स्तः॥ नं मे हा नि बो धा अ नान्द नि
बो धा अ व नी अ कि स हि ध्यां ता प गी पा इ को॥ नं गी पा वि
म नि बो धा गी पा इ को॥ नं ध्यां स्यां स्तः॥ नं मे हा नि बो धा अ नान्द नि
बो धा अ व नी अ कि स हि ध्यां ता प गी पा इ को॥ नं गी पा वि

क. ३०७

हाँ सः हाँ निवा नपाइ का॥ नै सै हूँ
 नन्द नाथ श्रीमहानिवा ॥ ६८ ॥
 वाधिका ना रु वे हूँ ॥ नमः
 शः शः शः ॥ सक को गट मह
 र्म महानिवा ॥ ६९ ॥ नन्द नाथ या ० पू ० ॥ ॥ वेँ डी श्री उँ की से
 सै हूँ ॥ हूँ ॥ हूँ ॥ हूँ ॥ हूँ ॥ हूँ ॥ हूँ ॥ हूँ ॥

निर्वाणप्रदानं नमो नमो निर्वाणप्रदानं नमो नमो

अतात्मानं तं स्रष्टा दिव प्रजा ॥ अस्या सनाय नमः ॥ अथ वल
 पद्मा सनाय नमः ॥ जों जी तः श्री लक्ष्मी पिनमः ॥ ३ ॥ अथ जंग
 वलि ॥ जों जी तः श्री लक्ष्मी यस्तु यस्तु रुधिर नमः ॥ हं स्वस्वात्मा
 कायस्तु यस्तु रुधिर नमः ॥ वलि चन्द्रादि ॥ पद्म मूडा ॥ जय ॥
 जों जी तः साहा ॥ १० ॥ साग्रा ॥ जवाकू सुम संकाशं कागधयः
 यं मसायुतिं तमायि सर्वपापघ्नं पुनमाभिदिवाकनं ॥ विदा
 वनं ॥ ॐ श्री कृष्णं ॥ ॐ नमोस्तुभ्यं ॥ विष्णु प्रजा ॥ जों ग नृवा

श्री कृष्ण नमो
 जों ग नृवा

सनाय नमः ॥ जों पद्मा सनाय नमः ॥ त्रियां जलि ॥ ॐ जों सः नव
 श्री नायाय नमः ॥ ३ ॥ जों लक्ष्मी वासुदेवाय नमः ॥ अथ जंग
 ॐ जों हृदयाय नमः ॥ नित्यादि न्या संव ॥ वलि चन्द्रादि ॥ वकु
 मूडा ॥ जय ॥ ॐ जों सः साहा ॥ १० ॥ साग्रा ॥ नमस्तु नकायमि ॥ व
 दार्चनं ॥ ॐ विश्व ननाटम श्रीमि ॥ ॐ नमो विष्णु प्रजा ॥ मिवाचन
 न्यास ॥ हों श्री गुरुभ्यो नमः ॥ नित्यादिक नव उंगो ॥ श्री सन प्रजा ॥
 दृष्टा सनाय नमः ॥ यद्वा सनाय नमः ॥ त्रियां जलि ॥ हों हों सः
 नमः मिवाय ॥ ३ ॥ हों हों सः सदा मिवाय ॥ अग्राय हों साहा

षडंग ॥ ह्रीं ह्रदयाय नमः ॥ ॐ स्वादि ॥ वलि चन्द नादि ॥ मि ॐ
 मूडा जय ॥ ह्रीं ह्रीं सः स्वाहा ॥ १० ॥ जय समर्प्य ह्रीं ॥ मि वारचन वि
 धि पालि द्ध ह्रीं ॥ ॐ ति ॥ मृत्युं प्रयस्य ॥ ॐ शं सः अम्हा य रुद्र
 ॐ स्वादि के न षडंगं न्यास ॥ आसन द्ध ज ॥ ॐ युग्म पत्रास
 नाय नमः ॥ ॐ यो जति ॥ ॐ शं सः मृत्युं प्रयाय नमः ॥ ॐ शं सः
 मृत्युं प्रयाय नग्राय शं स्वाहा ॥ षडङ्ग ॥ वलि ॥ लिंगं मूडा ॥ ज
 य ॥ ॐ शं सः स्वाहा ॥ १० ॥ जय समर्प्य ह्रीं ॥ मृत्युं प्रयाय न विधियायि
 द्ध ह्रीं ॥ लिंग मूडा ॥ अर्धाचारचन ॥ न्यास ॥ नमः रुद्र रूप

नमः ॥ कृ ॥ य ॥ हूं हूं ॥
 जः महापाशुपताणीयहः श्रुताय रुद्र ॥ १ ॥ जौं श्रुधाने जौं
 अंगुष्ठाख्यो नमः ॥ जौं ध्यानं ॥ जौं तर्जनीया स्वाहा ॥ २ ॥
 ध्यानं ॥ मध्यमाख्यो वषट् ॥ मध्यमाख्यो वषट् ॥ अनामिकाख्यो वौ ॥ ३ ॥
 पिकुल जौं कनिष्ठकाख्यो वौषट् ॥ नमस्कृत्य रुद्र ॥ महापा
 श्रुताय रुद्र ॥ गगः वक्तुं न्यास ॥ जौं ॐ ॥ ४ ॥ नाय
 उद्भव कुाय नमः ॥ वक्र नं ॥ जौं सदा ज्ञाताय रुद्र वक्राय
 नमः ॥ मूर्खा ॥ जौं श्रुधानाया दक्षिणवक्राय नमः ॥ ५ ॥ रुद्र ॥ ५ ॥

सर्व सर्वं

पञ्चमस्तुत

जौं वामदेवाय उरु नव कुप नमः॥ वामदेवाय नमः॥ जौं गत्य
नूत्वाय यमि नव कुप नमः॥ जौं यंचव कु म हा द वाय यम
प नव कुप नमः॥ बुक्त नमः॥ ततः षड्ग न्यास॥ जौं अर्धानेह
दयाय नमः॥ जौं थधान जौं लि नमः स्वाहा॥ जौं धान नर तन
दं गिखाय वषट्॥ हूं हूं सर्वगतं कवचाय हूं॥ हूं पिऊत हूं न
उत्पाय वी षट्॥ नमः सु नूत न पदः अस्तु यरु॥ उत्तपा

गालं परम्॥ जौं व वा ह नाय नमः॥ जौं अर्धाने जौं थधान
जौं धान नर तन हूं हूं सर्वगतं सर्वसुखं जौं पिऊत हूं नमः सु नूत
पदः गिरवा स्वस्ति नमः व वाय गीया हूं॥ जौं अर्धाना ये नमः॥
हों हों हों अर्धाना यग नुय हों स्वाहा॥ ३॥ षड्ग॥ गिरवाना
अथ विष्णु हस्ते नूत्याय धीमहि नमोऽर्धाने प्रवा दयात्॥ वसि
त वा वसि स्वदह॥ चन्दना दिगु नूत न नमः॥ जय॥ हों हों
हों स्वाहा॥ १॥ जयं ग हान स्वाहा॥ ह्रीं॥ गम ठं ह स्त सि तं गितं वरु

सितं सुमं कया लंजितं स्वद्योगं च भित्तं भित्तं वसु कलं च नुं भित्तं सुद्विनि॥
 एवं सर्वं भित्तं तथा सुमं हि माया पक्षः गं कनः॥ भिवस्य दं॥ वसु सुद्विनि
 सुकं भं भिवन भिवगिरी सुग्न दवा भि माता न गीर्षि गगनानि लिखयि
 विहिः किडतः काल मया॥ उष्ट्रा वसु पुता रिपु कटिग सु वृह लात्पाता
 लन्त लं स मा वकु सुव कुं गिद भराय हनं हं चं ददि मन्वः॥ ग्रथान
 स्या॥ वेदा चर्चन॥ ॐ भिवा नामासि॥ ॐ आते नृजा॥ ॐ नमः भम्वाय
 वनधारा वायव नमः ॐ कनाय वनयस्तु नाय वनमः भिवाय वः

भिवात नाय॥ भिवाचम्य॥ ॐ भित्तिं गमर्चनं॥ ॥ ॐ भम्वाय भिवपुसाद
 वनमः सर्वदः भक्ती धनः सा नन्दः सुन नायक उचरा वा सें धर्म कामपुदः
 ॥ वागी॥ भम्वाय नदस्तु वाग् वपुदा वा मादि वकु उचरा वा॥ धी॥ भम्वाय विना
 भकुष्ट राय सा नृ लु सु मस्तु हि मा॥ वेद॥ ॐ भिवा नामासि स्वचितिः
 सुपिता नमस्तु भूक्तु मानादि रूरीः॥ ॐ आते ह दु शिवा न नृ रघोरा पा
 पकाशिनी॥ तया नस्त न्या शन्त मया गिरिशन्ता भिचाकशी हि॥ १॥ भ्रुव
 वाय॥ पुष्पम॥ नतः यं उष्ट्रयत्॥ भिवाचम्य॥ ॥ तद न विधिं सुजना॥ ॥

सकासने

नगुक्त्रिकायंगुहजा॥ ॐ श्री अ न ग कि कम ला दिं ह्या नमः॥
 ॐ श्री अ न ग स न ह्या नमः॥ ॐ श्री अ न ग सूर्य म म्भु लाधिप
 वृक्ष पुता स नाय नमः॥ ॐ स्वाधि स्तौ न ग हा म न म्भु लाधिपः
 विष्णु पुता स नाय नमः॥ ॐ मणि प न ग वाक्त्रि न म्भु लाधिप नृप
 पुता स नाय नमः॥ ॐ श्री नारायण वायु म म्भु लाधिप रत्न
 व पुता स नाय नमः॥ ॐ विष्णु म म्भु लाधिप सदा मि
 व पुता स नाय नमः॥ ॐ श्री हृदय आयु न म्भु लाधिप वृषा स नाय

नमः॥ ॐ वज्र नख दंष्ट्रा युष्मद्य महासिंहासने नमः॥ ॐ नमः॥
 वृषासंस्कृतं नमः स्ववर्णं नमः ॥ ॐ कवकुंठिनं गुं च
 गजाष्टादशं नमः ॥ ॐ नमः यनं वागीश्वरं नमः ॥ ॐ नमः ॥
 जीवं वं नमः वागीश्वरं नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

नमः सर्वभूतेषु

नमः साधिनमः ७ नमः साधिनमः

ॐ नमः ॥ चरुने गन्धर्वदेव नमः ॥ पुष्पं लक्ष्मीदेव नमः ॥ पुष्पं व
नमः ॥ दीपं वक्रिदेव नमः ॥ त्रिवेद्यं विष्णुदेव नमः ॥
सूर्यसाधिनमः ॥ पुनः नमः नमः नमः नमः नमः ॥ सिद्धनेत्रावी
देवतंगी नमः ॥ पुष्पाक्षरि ॥ ३ ॥ नमः नमः नमः नमः नमः ॥
कृत्तिकायै कोटीं कोटीं इत्येव नमः ॥ सूर्याय नमः ॥ सूर्याय नमः ॥
विष्णवे नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥
नमः ॥ ३ ॥ षडङ्गं नमः ॥ षडङ्गं नमः ॥ षडङ्गं नमः ॥
दित्या नमः ॥ जोषः दित्या नमः ॥ संसत्या दित्या नमः ॥ वक्राय

दित्या नमः ॥ ॐ कोटीं कोटीं नमः ॥ गन्धर्वदेव नमः ॥ ॐ वद
आकिनीत्या नमः ॥ लंठू नमः ॥ लंठू नमः ॥ लंठू नमः ॥
दिवा नमः ॥ लंठू नमः ॥ लंठू नमः ॥ लंठू नमः ॥
क्रूरस्वाहा ॥ ॐ कोटीं कोटीं नमः ॥ कोटीं कोटीं नमः ॥
वलिंग क्रूरस्वाहा ॥ यों साधिनो वलिंग क्रूरस्वाहा ॥
नी सर्ववर्षा नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
वलिंग क्रूरस्वाहा ॥ वलिपागन ॥ नमः ॥ नमः ॥

ॐ श्रीं श्रीं: स्वाहा ॥ १० ॥ श्रीं श्रीं श्रीं स्वाहा ॥ १० ॥ श्रीं श्रीं
 श्रीं: स्वाहा ॥ १० ॥ श्रीं श्रीं स्वाहा ॥ १० ॥ जय स मुखा
 ॐ द जय गंतु न श्रीं श्रीं स्वाहा ॥ जल न म म ल व द न
 स गि व न्द ना द न य जय ग म र द न न मः ॥ धनः जय ग
 गिन सि ब्र ह्म का जय ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं जीं ॥ कृष्ण स गृ ज प ॥ १० ॥
 ॐ ॥ हृदि जय ग ॥ नृं जीं श्रीं १० ॥ नृवं कर्म वा नृ म स्य द द
 ३ का गि ग च म क्त्वं ग र न म स म्भूतं जयं सिद्धि ह व म नैव स्व स्यादा स म्भूत

हस्त पुग म्भूति सिद्धान्तान वचनं ॥ हस्ता ऊर्ध्व विव द्वाप
 ७२ ॥ नृं कृष्ण क जं द्रि ग म र्प म व य २ ॐ जीं स्वाहा ॥ ३ ॥
 न ह स्य मा ला मा द्य य द जय ग ॥ व द न ना क ग न ॥ श्रीं श्रीं
 मा ला र्थ न मः ॥ पार्थ य ग ॥ ॐ जीं मा ले २ म ता मा य स र्व ग
 कि स्य रू पि षी ॥ च त्त्वं गी स्य यी न्य स ग म्मा त्वै सिद्धि दा ए व
 जय य थ म क्ति गः ॥ नृं ज न मा र ग र्थे श्रीं कृष्ण का यी जीं जीं

कौं धान न्रधान न्रधाना शिव कौं कौं कि मि २ वि वं नै ३ सा
 ता ॥ वा दगं गगं ॥ जय मय ॥ मा ला स्य गिन सि स्य ॥ ५ ॥
 सु जल मा दा यं द व्या द क ह स स म य नै ॥ ग र्वा नि ग र्वा पि
 त्वं ग र्वा ना स्म र्वा ग र्वा ॥ सि धि र्वा वि ग र्वा म द वि त्वं ॥
 सु न ग र्वा ॥ ॐ ॥ दं ज र्वा ग र्वा ना स्वा ता ॥ स्वा ता स र्वा द व्या र्वा
 गिन र्वा मा ला र्वा ॥ ॐ ॥ सि धि र्वा नमः ॥ ॐ ॥ त्वं मा ला स र्वा

द वा नां प्री ति दा ग र्वा ता सदा ॥ गि वं वृ न्वा म र्वा द र्वा
 ती र्वा श्री व र्वा यः ॥ र्वि व र्वा म र्वा न म्वा ॥ मा ला कान र्वा
 स र्वा ॥ अ र्वा म र्वा ला कान र्वा पं थ न व र्वा व र्वा ॥
 स र्वा न र्वा न र्वा म र्वा ग र्वा व नमः ॥ ग र्वा व र्वा ग र्वा
 वि र्वा ग र्वा व र्वा म र्वा व र्वा ॥ ग र्वा व र्वा ग र्वा व र्वा
 ग र्वा व नमः ॥ ॐ ॥ स र्वा म र्वा ला कान र्वा क र्वा म र्वा द नि सि ता न

दृष्टा किः सुरी मा हृष्टो प्रोप्राप्यं च पृष्ठं अकृत कृत गनं पं
 चकं वा न्यषट्कं ॥ चत्वारः पंच न्यः पनन पिच पुन स लवणा
 मधु लदं सं हृष्टं यन गस्मे न मथ गूत्र वने री न वीणी क
 डं जी ॥ मधु तिष्ठान न स्म म द म् दिग मूखा व ड प घा हृदि
 का वृ क्का म्था यष्ट पं ड सून दिग पु भवे ॥ श्री पुषा गम दि क्का
 पु क्का ष्टा विंग का ग व स ष स ह र व व ड ष्ट ज स ह्नु कि गम
 ष्टा विंग म्ति रा दा ॥ कु म प द स हि ता वा ग्वा णिं ग व ध्म ॥ र व भं

१ न पि मं ग ति न ॥ १

वाम कु सि द्वि पं न विं पू न ग मि ला व नं वा ग प्र स रानि दृष्ट
 श्रुति वलि स क लं स र नं स र्व वि द्या ॥ दी र्घा पुर र्थ क वि ल्व नि
 चिन स र्ग ति का पा ग्मां का म सि द्विः स र्व नि चि ना द द क् श्रु ति
 वलि स क लं स र्वी ना न्य पु का ॥ ग्धा मा न का णि नं ग स न र
 च न मि ता म रू मा गं ग ग म मि वि श्वा ष्टि वा न् न ग ष्ठ थू ग न ज
 घ ना म्भ र व लो न ल का ष्ठी दि वा म्नी व म्भु अ हं व न व न क स
 म व र्ध नं कं ग वा ल ॥ ग्धा म ग्गा कृ त्ति का र्था वि ग न न र न सा